IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुनियादी शिक्षा और गाँधीजी के विचार

डॉ0 सोनी कुमारी

(अतिथि शिक्षक–डॉ0 एस0 के0 एस0 महिला महाविद्यालय, मोतीहारी, पूर्वी चम्पारण)

पता–भवदेपुर, वार्ड नं0–12

पोस्ट–भवदेपुर गोट, थाना –रीगा

जिला–सीतामढ़ी(बिहार)

पिन कोड–843302

गाँधी जी के अनुसार बुनियादी शिक्षा का आधार भारतीय संस्कृति है जो प्रत्येक बच्चे को बिना उसकी जाति का, धर्म का ख्याल किये बिना मिलनी चाहिए। वास्तव में यह शिक्षा बच्चे को बुनियादी आवश्यकताओं और प्रवृत्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। यह शिक्षा बच्चे की भविष्य में होने वाली प्रवृत्तियों और सम्भावनाओं का भी ख्याल रखती है। जिस समाज में वह बच्चा पैदा हुआ है, उस समाज की बुनियादी जरूरतों का भी ध्यान यह शिक्षा रखती है। वास्तव में यह शिक्षा इस देश की जनता और साधारण आदमी के लिए बनाई गई है, क्योंकि देश का साधारण आदमी ही देश का नींव होता है। चूँकि यह शिक्षा बच्चों को दी जाती है, इसलिए यह बुनियादी है, क्योंकि जीवन में यह पहली शिक्षा है जिसे वे प्राप्त करते हैं। बच्चों की शिक्षा के प्रारंभिक दौर में यह शिक्षा दी जाती है।

बुनियादी शिक्षा जीवन की शिक्षा है। यह जीने के तरीकों की शिक्षा है और जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने की शिक्षा है। लोगों का जीवन अच्छा हो, यह इस शिक्षा का उद्देश्य है। अच्छा जीवन वही होता है, जिसमें एक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं, गुणों और प्रवृतियों को विकसित करता है जिससे वह जिस समाज में रहता है, उस समाज का उपयोगी सदस्य बन जाता है। एक समन्वित व्यक्तित्त्व के विकास के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों का एक साथ विकास होना चाहिए। इसलिए गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा को 'जीवन की शिक्षा' कहा था। मानव व्यक्तित्त्व के विकास के लिए जितने गुणों की आवश्यकता है, उसको विकसित करना चाहिए। जैसे एक व्यक्ति के शारीरिक विकास के साथ–साथ उसके मानसिक सांस्कृतिक और आध्यत्मिक विकास के लिए भी पूरा प्रयत्न किया जाना चाहिए। इस शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना है, साथ ही दूसरों के प्रति सहयोग की भावना भी उसे पूर्ण रूप से रखनी चाहिए। उसे अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति और अपने समाज के प्रति कर्त्तव्य का बोध होना चाहिए। उसे अवकाश

के क्षणों में साहित्य, संगीत, कला का आनंद लेने की योग्यता होनी चाहिए। जिस तरह से संतुलित भोजन शरीर को स्वस्थ रखता है, वैसे ही संतुलित व्यक्तित्त्व के विकास से मनुष्य सुखी रहता है।

बुनियादी शिक्षा एक दुधारी तलवार की तरह बच्चों के व्यक्तित्त्व का दो प्रकार से विकास करती है। एक ओर बच्चे के व्यक्तित्त्व को संतुलित बनाती है, दूसरी ओर उच्च शिक्षा पाने के लिए योग्य भी बनाती है। इसलिए बुनियादी शिक्षा साफ सुथरा, स्वस्थ और आत्मनिर्भर जीवन की आधारशिला रखता है।

बुनियादी शिक्षा की मूलभूत कल्पना में किसी कारीगरी को सिखलाना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गाँधी जी ने इस बात पर जोर दिया था कि किसी कारीगरी को सीख कर के मनुष्य अपना स्वास्थ्य और सुख परिश्रम के द्वारा, आत्मनिर्भरता के द्वारा एवं बल के द्वारा प्राप्त कर सकता है। किसी कारीगरी को सीखने से उसमें मेहनत करने की मर्यादा तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सकता है। उसमें धीरज, सेवा की भावना, अनुशासन तथा सहयोग की भावना विकसित हो सकती है। इसके साथ ही उसमें ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा और स्वाध्याय की आदत विकसित हो सकती है। इस शिक्षा पद्धति से गाँधी जी को आशा थी कि देश में बड़े–बड़े विचारक और वैज्ञानिक पैदा हो सकते है। गाँधी जी के अनुसार अंग्रेजी शिक्षा–पद्धति ने केवल मनुष्य के बौद्धिक विकास पर ही जोर दिया है तथा मनुष्य की शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास पर ध्यान नहीं दिया है। गाँधी जी इसीलिए बच्चों को व्यक्तित्त्व का संतुलित विकास चाहते थे, जिससे उनका मष्तिष्क, शरीर, हृदय तथा आत्मा का समान रूप से विकास हो सके। गाँधी जी ने कहा था– 'मेरी शिक्षा पद्धति में बच्चे भी सभी प्रकार की शिक्षा दस्तकारी से प्राप्त करेंगे। वे दस्तकारी से अक्षरों का ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। वे हाथों से औजार पकड़ना सीखेंगे, आँखों से शब्दों और अक्षरों को सीखेंगे और कानों से शब्दों का अर्थ तथा अन्य अच्छी बातें सुनेंगे। इसीलिए यह शिक्षा–पद्धति स्वाभाविक और इस देश में सबसे सस्ती शिक्षा पद्धति होगी। अतः मेरे स्कूल के बच्चे अन्य स्कूलों की तुलना में जल्दी पढ़ेंगे और लिखेंगे।'[1] गाँधी जी ने लोगों को ये बात समझाई कि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने किरानी, और बाबू पैदा किया है। लार्ड में कॉले ने जिस शिक्षा–पद्धति को स्थापित किया था, उसका उद्देश्य अंग्रेजी शिक्षा–पद्धति ने भारतीय जीवन में दरार पैदा कर दी है। अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग जनता से अलग–थलग पड़े गये हैं और उन्हें शारीरिक मिहनत करने से नफरत हो गई है। इसके फसस्वरूप अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग गाँवों में रह कर खेती–बाड़ी के द्वारा रोजी–रोटी कमा कर जीने में असमर्थ हो गये हैं और उनका जीवन बनावटी हो गया है। इसीलिए अन्य शिक्षा–शास्त्रियों ने भी अंग्रेजी शिक्षा–पद्धति की आलोचना की। आचार्य जे0बी0 कृपलानी ने कहा कि अंग्रेजी–शिक्षा–पद्धति में बहुत सी खामियाँ है। यह छात्रों के मनोविज्ञान के विरूद्ध है तथा उन्हें समाज में मिल कर रहने के लायक नहीं बनाती है। डॉ0 जाकिर हुसैन ने भी अंग्रेजी शिक्षा–पद्धति की आलोचना करते हुए लिखा था कि अंग्रेजी शिक्षा–पद्धति छात्रों को समाज का उपयोगी सदस्य बनने में मदद नहीं करती है।'[2]

वास्तव में अंग्रेजी राज्य प्रचलित शिक्षा–पद्धति किताबी ज्ञान पर अधिक जोर देती थी। परीक्षायें पास करना, उसमें सबसे प्रमुख काम था इससे छात्रों में अनुशासन, सहयोग की भावना एवं नेतृत्व के गुणों का विकास नहीं होता था। 1937 में सात प्रान्तों में जब कॉग्रेसी–सरकारों की स्थापना हुई, तब गाँधी जी ने देश की शिक्षा –पद्धति में सुधार लाने के लिए अपने प्रस्ताव देश के शिक्षा–शास्त्रियों के सम्मुख रखा। उन्होंने दो सुझाव दिये जो निम्नलिखित हैं–

प्रारम्भिक शिक्षा सात वर्षों की हो जिसमें मैट्रीकुलेशन स्तर की सभी शिक्षा हो, केवल अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जाये और इसी में प्रत्येक लड़के एवं लड़कियों को एक व्यवसाय की शिक्षा भी दी जाये। इस प्रारम्भिक शिक्षा में ही प्राइमरी, मिड्ल और हाई स्कूल की शिक्षा भी दी जाये।

2. यह शिक्षा–पद्धति आत्मनिर्भर होनी चाहिए यानी स्कूलों का खर्च स्कूल में बनाई जाने वाली चीजों को बेच कर या स्कूल के खेतों में पैदा होने वाले सामान को बेच कर ही चलाया जाना चाहिए।'[3]

22 अक्टूबर, 1937 को वर्धा में शिक्षा–सम्मेलन का महत्त्वपूर्ण अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। इसकी सारी कार्यवाही हिन्दुस्तानी भाषा में सम्पन्न हुई। सभी कॉंग्रेसी सरकारों के कॉंग्रेसी मंत्री तथा अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति इसमें शामिल हुए। डॉ0 जाकिर हुसैन तथा आर्यनायकम् ने भी इसमें भाग लिया। पहले दिन की वैठक के बाद इस सम्मेलन में गाँधी जी के प्रस्तावों पर अपना विचार व्यक्त किया जो निम्नलिखित हैं–

वर्तमान अंग्रेजी–शिक्षा–पद्धति किसी प्रकार भी देश की आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है। अंग्रेजी को माध्यम बना कर देश के युवकों का विकास कुण्ठित कर दिया गया है और अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोगों और जनता के बीच गहरी खाई बन गई है जो अत्यन्त हानिकारक है। शिक्षित लोगों को किसी पेशे अथवा व्यवसाय की शिक्षा नहीं दी जाती है जिससे शारीरिक दृष्टि से कमजोर हो जाते हैं और कोई उत्पादन का कार्य नहीं कर सकते हैं। प्राइमरी स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है, उसे छात्र कुछ ही दिनों में भूल जाते हैं। प्रारंभिक शिक्षा साधारण जतना के लिए उपयोगी नहीं है। इसलिए प्रारंभिक शिक्षा कम से कम सात वर्षों की होनी चाहिए जिसमें मैट्रीकुलेशन स्तर पर का साधारण ज्ञान दिया जाना चाहिए। लेकिन अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जानी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को किसी पेशे अथवा व्यवसाय की शिक्षा दी जानी चाहिए।

लड़के या लड़कियों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए सारी शिक्षा एक फायदेमंद पेशे के द्वारा दी जानी चाहिए दूसरे शब्दों में व्यवसाय सिखलाने के दो उद्धेश्य होने चाहिए – पहला विद्यार्थी अपने पढ़ने का खर्च अपने परिश्रम की कमाई से ही दे सके दूसरा उनके समग्र व्यक्तित्व का विकास उस पेशे के द्वारा ही हो। लेकिन स्कूल की जमीन, भवन और पढ़ाई – लिखाई के सामान का खर्च समाज को अथवा सरकार को वहन करना पड़ेगा।

इन बुनियादी स्कूलों में सूती कपड़े, ऊनी कपड़े और रेशमी कपड़े बनाने और बुनने की कला सिखाई जायेगी। सूती कपड़ों के लिए रूई धुनने से लेकर सूत काटने, कपड़ा रंगने, तरह – तरह की छपाई करने, बुनने, फूल खिलौने बनाने की कलायें आसानी से और कम पैसे खर्च करके सिखलाई जा सकती हैं।

गाँधीजी के अनुसार सरकार की यह जवाबदेही होगी कि वह इन स्कूलों में शिक्षा पाये हुए लड़के–लड़कियों को उन पेशों में काम करने के लिए रोजगार दे अथवा उनके द्वारा बनाई हुई चीजों को उचित मूल्य पर खरीद ले। उच्च – शिक्षा को निजी क्षेत्र को सौंप दिया जाये और निजी क्षेत्र में ही कला, विज्ञान, इंजीनियरिंग, कृषि आदि क्षेत्रों में विश्वविद्यालय खोले जायें। सरकार द्वारा स्थापित विश्व – विद्यालय केवल परीक्षा लेने का काम करें और उनका काम परीक्षा के लिए ली गई धनराशि से चले। सरकार की ओर से एक केन्द्रीय शिक्षा विभाग होगा जो विश्वविद्यालयों की स्थापना की अनुमति देगा। ये विश्वविद्यालय निजी क्षेत्र में सुयोग्य, सच्चरित्र व्यक्तियों द्वारा सरकार के पास आवेदन पत्र देने पर केन्द्रीय शिक्षा विभाग द्वारा अनुमति दिये जाने पर खोले जायेंगे। ये विश्वविद्यालय देश में पूरे शिक्षा क्षेत्र की देखभाल करेंगे और प्रत्येक क्षेत्र के लिए, प्रत्येक परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम तैयार करेंगे, और उन्हें अनुमोदित करेंगे।'

गाँधी जी के ऊपर लिखे हुये प्रस्तावों पर पहले दिन ही विचार किया गया तथा प्रस्ताव इस सम्मेलन में पास किये गये।

1. 'यह सम्मेलन इस बात पर राजी है कि पूरे देश में सात वर्षों के लिए बच्चों को प्रारंभिक, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा दी जाये। शिक्षा का माध्यम विद्यार्थियों की मातृभाषा होनी चाहिए। यह सम्मेलन गाँधी जी के इस विचार से सहमत है कि इन प्रारंभिक सात वर्षो में विद्यार्थियों को हस्तशिल्प तथा दस्तकारी सिखलाई जाये जिसमें विद्यार्थी कोई एक कारीगरी सीख सके तथा इसके साथ उनमें अन्य गुणों को विकसित करने का भी प्रयत्न किया जाये जिससे वे जिस समाज में रहते हैं, उसके लिए उपयोगी बन सकें। सम्मेलन ने यह आशा व्यक्त की कि इस शिक्षा – प्रणाली से इतना पैसा आ जायेगा जिससे शिक्षकों की तनख्वाह दी जा सकेगी।'[4]

गाँधी जी ने इस सम्मेलन में पास किये गये प्रस्तावों पर अपने हरिजन पत्र में एक लेख लिख कर अपनी प्रसन्नता को जाहिर की और लिखा कि 'इस शिक्षा – प्रणाली से स्कूल, बेकार युवकों को पैदा करने वाले कारखाने नहीं रहेंगे। उन्होंने आगे लिखा जाकिर हुसैन समिति यह निश्चित करेगी कि प्रत्येक वर्ष में विद्यार्थियों को क्या – क्या चीजों और किन तरीकों से पढाई सिखाई जायें।[5]

इस प्रकार महात्मा गाँधी की राष्ट्रीय शिक्षा योजना जिसे 'वर्धा योजना' भी कहते हैं जाकिर हुसैन समिति द्वारा स्वीकृत की गई और महात्मा गाँधी के पत्र हरिजन में '11 दिसम्बर, 1937 को यह शिक्षा योजना एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में पूर्ण रूप से प्रकाशित हुई और इससे पूरे देश में व्यापक तौर विचार – विमर्श होने लगा।'[6]

इस योजना को तीन विदेशी शिक्षा शास्त्रियों ने भी अनुमोदित किया तथा इसकी प्रशंसा की। ये विदेशी शिक्षा – शास्त्री थे : 1. डॉ0 जिलिएकस, 2. प्रोफेसर बोवेट तथा 3. प्रोफेसर डेविस।

इसके साथ ही अमेरिका के डॉ0 जॉन डी. बोअर ने भी वर्धा योजना से सहमति जाहिर की। हुसैन समिति ने सिफारिसें भी की –

सभी बच्चों को सात वर्ष से चौदह वर्ष तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जाये। इस शिक्षा पद्धति में बुद्धिमान और सुयोग्य नागरिक बनाने की कोशिश की गयी है। बच्चों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाये, विदेशी भाषा सीखना बच्चों के लिए बोझ बन जाता है। इसलिए उनका मानसिक विकास ठीक से नहीं होता। अपनी मातृभाषा के माध्यम से वे बच्चे कठिन से कठिन विषय आसानी से समझ सकते हैं। इसलिए देश की प्रान्तीय भाषा ही शिक्षा का माध्यम बनाई जाये। यह सात साल की तमाम तालीम किसी उत्पादक हाथ की दस्तकारी के मार्फत दी जाय और जहाँ तक संभव हो, दूसरी तमाम हलचलें और काम भी इसी केन्द्रीय धंधे के इर्द गिर्द चलें। धंधा बच्चे की परिस्थतियों को पूरी तरह ध्यान में रखकर ही चुना जाना चाहिए। जहाँ तक सम्भव होगा यह शिक्षा पद्धति अपना खर्च स्वयं निकाल लेगी। स्कूलों में जो कारीगरी की चीजें बनाई जाएगी, उन्हें बेचकर खर्च निकालने की कोशिश की जायेगी, लेकिन स्कूल के भवन, कुर्सी, टेबुल आदि का खर्च सरकार वहन करेगी। इसके लिए शिक्षकों को कारीगरी सिखलाने के प्रति काफी ईमानदार होना आवश्यक है जिससे स्कूलों का खर्च चल सके। कारीगरी सिखलाने वाले शिक्षक काफी प्रशिक्षित होने चाहिए। कारीगरी सिखलाने वाली कक्षायें काफी अच्छे तरीके से सुसज्जित होनी चाहिए। जो भी कारीगरी हो उस इलाके की जरूरतों के मुताबिक हो तथा इसके साथ ही उन जरूरतों का बाजार भी होना चाहिए। गाँधी जी के विचार में 'जापान में जिस तरह पढ़ते हुए बच्चे पैसे कमा लेते हैं उसी प्रकार भारत में भी पढ़ते हुए बच्चे पैसे कमा लेंगे। इससे माता – पिता का भार भी हलका हो जायेगा और बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होगा। गाँधी जी की आशा थी इससे शिक्षकों की तनख्वाह भी निकल आयेगी।'[7]

बहुत से शिक्षा शास्त्रियों ने गाँधीजी की इस योजना की कटु आलोचना की सामाजिक शिक्षकों की तनख्वाह स्कूल में बनाई हुई चीजों को बेचने से ही आ जाएगी कि 'इससे शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों का शोषण हो सकता है तथा स्कूल कारखाने बन जायेंगे। शिक्षकों का ध्यान अधिक उत्पादन कर के अधिक आमदनी कमाने पर चला जायेगा और विद्यार्थियों का बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक विकास रूक जायेगा।'[8]

फलतः गाँधी जी का जो उपदेश था कि बुनियादी शिक्षा प्रणाली में बच्चों का शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा का एक साथ विकास किया जायेगा, वह आदर्श पूरा नहीं हो सकेगा। इसलिए इस पहलू को बाद में छोड़ दिया गया और सरकार को ही बुनियादी स्कूलों की स्थापना और संचालन का भार दिया गया।

गाँधी जी ने इस योजना में सूत कातने और कपड़ा बनाने सबसे पहली कारीगरी के रूप में सिखलाने पर जोर दिया था, लेकिन उन्होंने साथ ही कृषि, बढ़ईगिरी, लोहार का काम, कशीदा काढ़ना तथा अन्य कुटीर – उद्योगों को सिखलाने पर भी जोर दिया था। गाँधी जी ये भी चाहते थे कि 'कारीगरी का चुनाव उन गाँव या कस्बे की जरूरतों को देखकर ही हो।'[9]

यह शिक्षा जीवन से सम्बद्ध होनी चाहिए और सम्पूर्ण ज्ञान इसका उद्देश्य होना चाहिए। सब प्रकार का ज्ञान कारीगरी के माध्यम से ही दिया जाना चाहिए और ज्ञान और कारीगरी में घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए।

'इस योजना में सहयोग के गुण विकसित करने तथा अच्छा नागरिक बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए जिससे इस शिक्षा को पाने वाले बच्चे आदर्श नागरिक बन सके।'[10] बुनियादी शिक्षा वास्तव में बच्चों की शिक्षा पद्धति है। बच्चों को कारीगरी और खेल – कूद के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त कराने की कोशिश की जानी चाहिए। बच्चों पर कुछ भी लादना नहीं चाहिए। उन्हें स्वयं सब कुछ सीखना चाहिए। यह शिक्षा बच्चों के अलावा सब को दी जा सकती है, हालाँकि इसमें प्रारंभिक शिक्षा पर ही ज्यादा जोर दिया गया है।

यह शिक्षा बचपन से बुढ़ापे तक दी जा सकती है। तीन वर्ष से छः वर्ष तक खिलौनों के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। छः वर्ष से चौदह वर्ष तक बुनियादी स्कूलों में शिक्षा दी जानी चाहिए। इसके बाद विद्यार्थी तकनीकी शिक्षा भी प्राप्त करने के लिए तकनीकी कॉलेजों में जा सकते हैं अथवा वे अपनी इच्छा के मुताबिक कारीगरी के साथ – साथ उच्च ज्ञान जैसे – इतिहास, भूगोल, साहित्य अथवा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इसी शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत ग्रामीण विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई जिसमें कारीगरी, खेती एवं सामुदायिक विकास योजना पर भी जोर दिया गया। कुछ विश्वविद्यालय कृषि विश्वविद्यालय के रूप में भी विकसित किये गये। इसके साथ ही सामाजिक शिक्षा को भी बुनियादी शिक्षा का अंग माना गया। इसके अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा को उचित स्थान दिया गया। प्रौढ़ शिक्षा में केवल अक्षर ज्ञान और लिखने – पढ़ने पर ही जोर नहीं दिया गया, बल्कि प्रौढ़ लोगों को 'संस्कृति, विज्ञान, सामान्य ज्ञान तथा सामाजिक ज्ञान तथा सामाजिक जागरूकता सिखलाने पर जोर दिया गया जिससे प्रौढ़ लोग पूर्ण जीवन जी सकें।'[11]

संदर्भ – सूची :

1. 'महात्मा', डी0 जी0 टेन्दुलकर टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, बम्बई, 1952, पृष्ठ 227
2. 'हिस्ट्री ऑफ एडुकेशन इंडिया', जे0 एन0 अरोड़ा, घनपतराय एंड संस, दिल्ली, 1972 पृष्ठ 58
3. 'महात्मा' – डी0 जी0 टेन्डुलकर टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, बम्बई, 1952, पृष्ठ 232
4. वही, पृष्ठ 241 – 42
5. वही, पृष्ठ 242 – 43
6. वही, पृष्ठ 244
7. 'हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजुकेशन', जे0 एन0 अरोड़ा, धनपतराय एंड संस, दिल्ली, पृष्ठ 104 – 05
8. 'गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम', जी0 पी0 लूथरा, ऑक्साफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई, 1950, पृष्ठ 457
9. वही, पृष्ठ 458
10. वही
11. 'हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजुकेशन', जे0 एन0 अरोड़ा, धनपत राय एंड संस, दिल्ली, पृष्ठ 107